Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 SHISRRJ | Volume 7 | Issue 1
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

अरबों की सिंध विजय–प्रभाव एवं परिणाम

डॉ० विभूति नारायण सिंह

पीएच. डी (इतिहास)

Article Info

Publication Issue :
January-February-2024
Volume 7, Issue 1
Page Number : 188-191
Article History
Received : 01 Feb 2024
Published : 15 Feb 2024

सिन्ध पर अरब–आक्रमणकारियों की विजय भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण एवं अविस्मरणीय घटना है। अरबों की सिन्ध विजय के विषय में इतिहासकारों के दृष्टिकोणों में मत–भिन्नता देखने को मिलती है। इतिहासकार लेनपूल के अनुसार- "सिन्ध की विजय भारत और इस्लाम के इतिहास में एक घटनामात्र थी, परिणाम विहीन विजय थी।" वूल्जलेहेग ने भी इसे 'प्रसंगमात्र' माना है। विद्वान आर. सी. मजूमदार इसे केवल 'महत्वहीन परिणाम वाली घटना मानते हैं।

इन सभी विद्वानों का मानना है कि सिन्ध पर अरबों के आक्रमण व विजय का कुछ भी स्थायी परिणाम नहीं निकला।

राजनीतिक दृष्टिकोण से भले ही अरबों की सिन्ध विजय को परिणाम शून्यता के दृष्टिकोण से देखा जाए क्योंकि इससे अरबवासी केवल सिन्ध पर ही अधिकार कर सके इससे आगे बढ़ाने में उन्हें सफलता नहीं मिल सकी। अरबों ने सिन्ध की प्रशासनिक व्यवस्था में भी कोई मौलिक परिवर्तन नहीं किया बल्कि इसका प्रशासन वे भारतीयों के माध्यम से ही चलाते रहे। अरबों को जिस प्रकार की सफलता एशिया, अफ्रीका या यूरोप के अन्य क्षेत्रों में मिली वैसी सफलता उन्हें सिन्ध में नहीं मिल सकी। फिर भी सिन्ध विजय को एक घटनामात्र ने मानकर इस पर गहन चिंतन किया जाए तो यह तथ्य उभरकर आएगा कि यह विजय एक दूरगामी परिणाम वाली विजय प्रतीत होगी। एक विद्वान के अनुसार- "अरबों ने एक ऐसी चुनौती प्रस्तुत की, जिसका सामना करने के लिए भविष्य में विभिन्न शक्तियां उदित हुई जो भारत में आगामी 300 वर्षों तक बनी रहीं। गुर्जर–प्रतिहार राष्ट्रकूट और चालुक्यों की प्रतिष्ठा की स्थापना उनके द्वारा अरबों के विरोध के कारण हुई। दीर्घकालिक दृ ष्टि से भी अरबों ने राजनीतिक ढांचे में एक महत्वपूर्ण नीति का प्रचलन किया, उन्होंने इस्लाम धर्म और

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

इस्लामी राज्य के बीच अंतर रखा। मध्यकाल में अलाउद्दीन खिलजी, मोहम्मद तुगलक और शेरशाह ने राज्य के मामले में उनके हस्तक्षेप पर जो प्रतिबंध लगाए, उस नीति के बीज अरबों के उपर्युक्त दृष्टिकोण में दिखाई देते हैं।" अरबों की विजय ने ही भारत में तुर्की विजय की पृष्ठभूमि भी तैयार कर दी।

सिन्ध विजय के सांस्कृतिक परिणाम भी महत्वपूर्ण हुए। विजयोपरांत शुरू में तो अरबों ने सिन्ध में धार्मिक उन्माद दिखाए, मंदिर तोड़े, बलात् इस्लाम कबूल करवाया, गैर–इस्लामियों की हत्या करवायी, उन्हें गुलाम बनाया किंतु सिन्ध में बस जाने के पश्चात् धीरे–धीरे उनका जोश ठंडा पड़ गया और तत्कालीन राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों तथा प्रतिरोध से बाध्य होकर बाद में उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनायी। अब उनके द्वारा गैर–इस्लामियों से धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान करने के एवज में 'जजिया' नमक विभेद कर वसूल किया। शनैः शनैः अरबों ने भारतीयों से सामाजिक और वैवाहिक संबंध भी स्थापित कर लिया और इससे वे भारतीयों के और नजदीक आए, इससे भारतीय मुसलमानों का एक नया वर्ग इसी समय उभरा। अरबों ने भारत से कई नई बातें ग्रहण की और उनका प्रचार यूरोप में भी किया। भारतीय कला, धर्म, दर्शन और ज्ञान–विज्ञान ने अरबों को अत्यधिक प्रभावित किया। विद्वान हेवेल ने यह मत प्रकट किया है कि- "यह भारत था, यूनान नहीं, जिसने इस्लाम को उसकी युवावस्था में शिक्षा दी, उसके दर्शन और रहस्यवादी विचारों का निर्माण किया तथा साहित्य, कला एवं स्थापत्य को इसकी विशिष्ट अभिव्यक्ति को अनुप्रमाणित किया।" सिन्ध विजय के पश्चात अनेक अरब विद्वान यहां आए और यहां के अनेक ग्रन्थों को ले जाकर फारसी में अनूदित किया। खलीफा मंसूर के समय भारत में ब्रह्मगुप्त लिखित **ब्रह्मासिद्धांत** तथा **खंडनखाद्य** का अरबों ने भारतीयों की मदद से अरबी अनुवाद किया। **पंचतंत्र** का भी अरबी अनुवाद हुआ। सूफी मत भी काफी हद तक भारतीय दर्शन और बौद्ध धर्म से प्रभावित दिखाई पड़ता है। चिकित्सा, ज्योतिष, रसायनशास्त्र और गणित के क्षेत्र में भी अरबों ने भारत से काफी कुछ सीखा। अरबों की चित्रकला, संगीत और स्थापत्य के विकास में भी भारतीयों का योगदान रहा। अलबरूनी के अनुसार– अरबों द्वारा प्रयुक्त संख्याओं के चिन्ह 'हिंदू चिह्नों के सर्वसुंदर स्वरूपों से निकले थे।' भारतीय **'कल्प'** की धारणा अरबों में बहुत लोकप्रिय हुई। अरब भूगोलवेत्ता आर्यभट्ट के सिद्धांत से बहुत प्रभावित थे।

आठवीं शताब्दी में सिन्ध, मुल्तान और पंजाब के कुछ भागों पर अरबों का राजनीतिक प्रभाव स्थापित हुआ। अल–मंसूरा सिंध में अरबों की राजधानी बनी। धीरे–धीरे अरबों ने प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने का प्रयास शुरु किया, पूर्व में उनके प्रभाव क्षेत्र की सीमा गुर्जर–प्रतिहार राज्य की सीमा तक पहुंच गयी अतः गुर्जरों ने अरबों के प्रसार को रोकने का प्रयास किया और उसमें वे सफल भी रहे। इसी प्रकार उत्तर में कार्कोटों ने अरब प्रसार को रोका। गुर्जर–प्रतिहार नरेश नागभट्ट द्वितीय ने अरबों को मध्य भारत में बढ़ने से रोका। वस्तुतः अरब सिंध और

मुल्तान से बाहर अपना राजनीतिक प्रभाव स्थापित करने में विफल रहे, तथापि अरब व्यापार–वाणिज्य के उद्देश्य से सिन्ध से बाहर, विशेषतः दक्षिण भारत में निवास करने लगे। अरबों ने राष्ट्रकूटों से सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर उनका संरक्षण प्राप्त कर लिया। राष्ट्रकूटों ने उन्हें व्यापार और आवास की सुविधा प्रदान की इसीलिए अरब लेखक राष्ट्रकूटों की प्रशंसा करते हैं, राष्ट्रकूटों को भारत का सबसे महत्वपूर्ण राजा मानते हैं तथा 'बलाहार' उपाधि से सम्बोधित करते हैं। राष्ट्रकूटों ने न सिर्फ व्यापारिक सुविधाएं प्रदान की। बल्कि धार्मिक स्वतंत्रता भी दी, इसीलिए दक्षिण भारत में अरब बड़ी संख्या में निवास करने लगे। अल–मसूदी के अनुसार कोंकण में सिराफ, बसरा, अमन और बगदाद से आए हुए करीब 10,000 मुसलमान रहते थे। कोंकण के अतिरिक्त मालाबार, आन्ध्र, मद्रास, मैसूर, गुजरात और कठियावाड़ में भी बड़ी संख्या में अरब निवास करते थे। उत्तर और मध्य भारत में गुर्जर प्रतिहारों के विरोध के कारण अरबी और भारतीय संस्कृति का व्यापक सम्पर्क नहीं हो सका, परन्तु दक्षिण भारत में अरब इस्लाम का व्यापक प्रचार करने में सफल रहे।

अरब विजय के परिणाम स्वरूप आठवीं से दशवीं शताब्दी के मध्य हिन्द–अरब व्यापारिक सम्बन्धों का सर्वाधिक विकास हुआ। इसका सर्वाधिक विस्तार अब्बासी खिलाफत द्वारा बगदाद की स्थापना के बाद हुआ। बगदाद और अरब सागर में फारस की खाड़ी द्वारा सीधा व्यापारिक संपर्क स्थापित हुआ। बसरा अन्तर्राष्ट्रीय मंडी के रूप में विकसित हुई जहाँ भारत, चीन, मिस्र, पूर्वी अफ्रीका और अन्य देशों से व्यापारिक सामान आते थे और उन्हें अरब साम्राज्य के विभिन्न भागों में भेजा जाता था। इसी प्रकार फारस की खाड़ी स्थित शिराफ बंदरशाह से भारत, चीन और अन्य पूर्वी देशों को अरबी जगत के वस्तुओं का निर्यात किया जाता था। हिंद–अरब व्यापार के विकास के कारण भारत में अनेक बन्दरगाहों की समृद्धि बढ़ी।

भारत अरब को मुख्यतः सागौन, कच्चा लोहा, तलवार, चाँदी, हीरा, मोती, गैंडा की सींग, हाथीदांत, मसाला, सुगन्धित पदार्थ, आम, कटहल, नींबू, नारियल, चीनी, मोर सूती वस्त्र, नील, चंदन आदि का निर्यात करना था जब कि आयातित वस्तुओं में लोबान, घोड़ा, सोना, खजूर आदि प्रमुख था। हिंद–अरब व्यापार संतुलन भारत के पक्ष में था, लगभग 13वीं सदी में अब्बासी खिलाफत के पतन तथा अरब सागर में पुर्तगालियों के प्रभाव से भारत–अरब व्यापारिक सम्बन्ध समाप्त प्राय हो गया।

अरबों की तुलना में भारतीय अरब सम्पर्क से कम प्रभावित हुए। अरबों से सम्पर्क का एक महत्वपूर्ण परिणाम था भारत में, विशेषतः दक्षिण भारत में इस्लाम धर्म का प्रभाव बढ़ना। जिस प्रकार इस्लामी सूफीवाद भारतीय बौद्ध दर्शन से प्रभावित हुआ था, उसी प्रकार दक्षिण भारतीय धार्मिक आन्दोलन पर भी इस्लाम का धार्मिक प्रभाव माना जाता है, इसके कुछ उदाहरण जैसे कि एकेश्वरवाद की उपासना पर बल, भक्ति, समर्पण, गुरु–भक्ति

पर बल की भावना, अनेक क्षेत्रीय भाषाओं, हिंदी, पंजाबी, सिन्धी, गुजराती, मलयालम और तमिल पर अरबी भाषा ने प्रभाव डाला।

इस प्रकार आठवीं शताब्दी में मुहम्मद–बिन–कासिम द्वारा सिन्ध विजय के तत्कालीन परिणाम यद्यपि राजनैतिक दृष्टिकोण से बहुत अधिक प्रभावशाली नहीं थे, परन्तु इसके अत्यन्त दूरगामी परिणाम सिद्ध हुए। वी. एस. पाठक के शब्दों में– "जीवन, विज्ञान और धर्म के अनेक क्षेत्रों में सिंध में अरब अधिकारियों के साथ एक ऐसे युग का सूत्रपात हुआ, जिसे हिन्दू मुसलमान संस्कृतियों के भविष्य में होने वाले पारस्परिक आदान–प्रदानों की पूर्वपीठिका कहना अनुपयुक्त न होगा।"

सन्दर्भ–

1. भारत पर अरब आक्रमण 1931 आर. सी. मजूमदार
2. प्राचीन भारत की इतिहास डॉ. आर. एस. शर्मा
3. चचनामाहः सिन्ध पर अरबों के हमले का वृतान्त, अनुवाद हरीश चन्द्र तलरेजा
4. प्रोविग्स इन टू इंडियन कल्चर– प्रो. वी. एस. पाठक एज. ए हिस्टोरियन्स– डॉक्टर विपुला दूबे